© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology

स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 रघुराज सिंह
शोध निर्देशक, प्राचार्य
देवेन्द्र यादव
शोध–छात्र (शिक्षाशास्त्र)
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश– प्रस्तुत विषय स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। उद्देश्य के रूप में स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, सैद्धान्तिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, नैतिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य का अलग–अलग तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति के अनुसार, शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि से पूर्ण किया गया है। प्रस्तुत शोध में प्रयागराज जनपद में स्थित शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सभी छात्र एवं छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चुनाव हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें कुल 200 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है। मूल्य परीक्षण श्रीमती कमल द्विवेदी, रीडर एवं हेड, मनोविज्ञान विभाग, डी.जी. पोस्ट ग्रजूएट कालेज, कानपुर द्वारा निर्मित है। प्रस्तुत परीक्षण में सात प्रकार के मूल्य दिये गये है– आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, सैद्धान्तिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, नैतिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य। प्रत्येक खण्ड में सातों मूल्य के कथन निर्धारित किये गये है। इस प्रकार कुल 56 कथन दिये हुए है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक पायी गयी।
- वित्तपोषित सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में सामाजिक मूल्य, राजनीतिक मूल्य एवं नैतिक मूल्य स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक पायी गयी।

स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के सैद्धान्तिक मूल्य एक–दूसरे के समान पाया गया।

की–वर्ड– स्ववित्तपोषित, वित्तीय सहायता, शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय, बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी, मूल्य

भूमिका

आधुनिक युग में शिक्षा समाज में परिवर्तन लाने का मुख्य स्रोत है। शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। शिक्षा के तीन प्रमुख अंगो–शिक्षक, छात्र एवं विषय सामग्री में शिक्षक का सर्वप्रमुख स्थान है। शिक्षक के निर्देशन के अभाव में छात्र ज्ञान अर्जन कर ही नहीं सकता है। शिक्षक ही शिक्षण प्रक्रिया को सही दिशा की ओर मुखरित कर सकता है। शिक्षक ही राष्ट्र का निर्माता माना जाता है। शिक्षक की सहायता के बिना शिक्षण प्रक्रिया को सफल नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए शिक्षक व शिक्षार्थी में उपयुक्त संबंध होना अति आवश्यक है। शिक्षण को सफल बनाने के लिए ही शिक्षक के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। एक कुशल व प्रशिक्षित अध्यापक ही अपनी शिक्षा के माध्यम से अपने छात्रों का उचित मार्गदर्शन कर सकता है।

वर्तमान समय में शिक्षा समाज में परिवर्तन लाने का प्रमुख माध्यम है। समस्त शिक्षण प्रक्रिया में तीन चीजें शामिल होती हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यचर्या। इसमें शिक्षक का स्थान सर्वोपरि है। इन सबके साथ–साथ शैक्षिक वातावरण एवं शिक्षकों के मूल्य, व्यक्तित्व, अभिक्षमता के तत्त्व भी वर्तमान शिक्षण प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनमें से किसी एक की भी अनुपस्थिति शिक्षण प्रक्रिया को न केवल प्रभावित वरन् अवरूद्ध कर सकती है। शिक्षक के निर्देशन के अभाव में छात्र ज्ञान अर्जन कर ही नहीं सकता है। शिक्षक ही शिक्षण प्रक्रिया को सही दिशा की ओर मुखरित कर सकता है। शिक्षक ही राष्ट्र का निर्माता माना जाता है। शिक्षक की सहायता के बिना शिक्षण प्रक्रिया को सफल नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए शिक्षक व शिक्षार्थी में मधुर संबंध होना अति आवश्यक है। शिक्षण को सफल बनाने के लिए ही शिक्षक के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। एक कुशल व प्रशिक्षित अध्यापक ही अपनी शिक्षा के माध्यम से अपने छात्रों का उचित मार्गदर्शन कर सकता है।

अध्यापक शिक्षण पर विचार करने हेतु हमें अपने देश की अध्यापक शिक्षा पर दृष्टि डालना अत्यन्त आवश्यक है। प्राचीनकाल से होकर आधुनिक काल तक जो भी शिक्षा के लिए प्रयास किये गए हैं या उनमें जो भी सुधार हुए हैं उन सबका वर्णन हम प्राचीन काल, मध्यकाल तथा आधुनिक काल की अध्यापक शिक्षा के आधार पर करेगें।

अध्यापक शिक्षा का अभिप्राय उन सभी औपचारिक तथा अनौपचारिक क्रियाओं तथा अनुभवों का ज्ञान प्रदान करने से है, जो किसी व्यक्ति को अध्यापक के उत्तरदायित्वों को प्रभावशाली ढंग से निर्वाह करने में समर्थ बताते है। पहले अध्यापक शिक्षा को अध्यापक प्रशिक्षण के नाम से जाना जाता था। परन्तु अब अध्यापक से सम्बन्धित दृष्टिकोण में व्यापकता आ गई है तथा अध्यापकों की तैयारी को एक व्यापक अर्थों में स्वीकार करके इसे अध्यापक शिक्षा का नाम दे दिया गया है। अध्यापक प्रशिक्षण शब्द से एक संकुचित व सीमित दृष्टिकोण प्रतीत होता था। प्रशिक्षण शब्द से कार्य करने की कुछ युक्तियों को नीरस व यांत्रिक ढंग से अभ्यास कराये जाने का एहसास होता है। ठीक उसी तरह से जैसे किसी भय या लालच के द्वारा पशुओं को कुछ कार्यों को यान्त्रिक ढंग से कराये जाने का अहसास होता है। अध्यापक शिक्षा के सन्दर्भ में प्रशिक्षण शब्द का प्रयोग अध्यापकों की तैयारी के कार्य की गरिमा को समाप्त कर देता है तथा इसे रूढ़िवादी परम्परागत, सैद्धान्तिक व कृत्रिम दृष्टिकोण दे देता है। इसी कारण से अध्यापक प्रशिक्षण के स्थान पर अध्यापक शिक्षा जैसे व्यापक शब्द को प्रतिष्ठित किया गया अब अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय भावी व वर्तमान अध्यापकों के सर्वांगीण विकास से है। अभिप्राय है कि अध्यापक शिक्षा का कार्यक्रम भावी अध्यापकों तथा सेवारत अध्यापकों, व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक व्यवसायिक तथा सांस्कृतिक विकास करके उन्हें अध्यापक के विभिन्न उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक व प्रभावशाली ढंग से पूरा करने के योग्य बनाता है। स्पष्ट है कि अध्यापक शिक्षा की अवधारणा प्रशिक्षण से अधिक व्यापक है। अध्यापक शिक्षा के अन्तर्गत न केवल शिक्षण कला में निपुण बनाया जाता है बल्कि अध्यापकों को शिक्षा प्रक्रिया की विभिन्न विद्याओं से सम्बन्धित अर्न्तदिष्ट विकसित करने योग्य भी बनाया जाता

है। अब विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रथम शिक्षा उपाधि का नाम शिक्षा स्नातक है तथा अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं को शिक्षा महाविद्यालय अथवा अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय कहते है।

आज हम 21वीं शदी में प्रवेश कर चुके है। शिक्षा की चुनौतियाँ ज्ञान की अनेक धाराओं के अन्वेषण की नवीनतम विद्याओं की तरफ अग्रसर हो रही है जिससे शिक्षा व्यवस्था आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के माध्यम से मार्ग को सुगम कर सकें।

शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए आज हमारे देश में केन्द्र सरकार द्वारा केन्द्रीय विद्यालयों में प्राथमिक व उच्च प्राथमिक शिक्षा तथा राज्य सरकार द्वारा परिषदीय विद्यालयों में प्राथमिक व उच्च प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा दे रहा है जिसके माध्यम से देश के बालकों में राष्ट्रीय समरसता, समानता, सहयोग, आस्था, श्रद्धा और एक–दूसरे के प्रति विश्वास को उत्पन्न किया जा सके। यही हमारे जीवन मूल्य है लेकिन आज हमारा ध्यान इन मूल्यों से हटने लगा है इस भौतिकवाद के दौड़ में जीवन मूल्य न्यून होते जा रहे है। जिसके कारण समाज में स्वार्थ व भ्रष्टाचार का बोल–बाला बढ़ता जा रहा है। चूँकि बालक ही विकास की आधारशिला है और ये बालक प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते है जिनमें केन्द्रीय एवं परिषदीय विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका परिलक्षित होती है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व की कुँजी है अतः शुरू से ही वह शिक्षा जो वर्तमान समय में हमारे सामने राज्य सरकार द्वारा स्थापित परिषदीय विद्यालयों के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के रूप में हमारे सामने दृष्टिगोचर हो रही है जो हमारे समाज की रीढ़ है उसमें नैतिकता, समानता, भाई–चारा और विश्वास जैसे जीवन मूल्यों को विकसित करना है साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर संचालित केन्द्रीय विद्यालय जो हमारी राष्ट्रीय एकता के धरोहर के रूप में स्थापित है। उसके स्थापना के उद्देश्यों को जो राष्ट्रीय जीवन मूल्यों का आधार है।

समाज में मूल्यों का लगातार विघटन हो रहा है। आधुनिक काल में कुछ मूल्यों को पुनः परिभाषित तथा पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। ऐसी अनेक स्थितियाँ आती है जब विद्यालय में प्रदत्त तथा ग्रहीत मूल्य समाज में सामान्यतया व्यवहार में नहीं लाये जाते। मूल्यों को आत्मसात करने का कार्य शिक्षा के द्वारा और अनिवार्यतया अध्यापक शिक्षा के द्वारा प्रमुख रूप से पूरा किया जा सकता है। अध्यापक अपने व्यवहार द्वारा विद्यार्थियों को मूल्यों का आत्मसातीकरण करा सकते है। अपने शिष्यों के कल्याण के लिए पूर्णतः कटिबद्ध, परिश्रमी व सृजनशील शिक्षकों ने शिक्षा प्रणाली में व्याप्त असंतोषों व नगण्य लाभों के बावजूद अपने दायित्वों को समर्पण भाव से निभाया है। दुर्भाग्यवश अनुपयुक्त शिक्षकों के कारण हमारा शिक्षातंत्र पंगु हो गया है। हमारे अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षकों में शिक्षण प्रविणता, अभिप्रेरण कार्यमूल्य व मानवीय मूल्य विकसित करने में असफल रहते हैं। ओड (1988) की मान्यता है कि शिक्षकों को स्वयं के लिए मूल्यों का निर्धारण करना होगा, उन्हें इन मूल्यों के सन्दर्भ में स्वयं सचेत व सक्रिय रहना होगा। शिक्षण–प्रशिक्षण की अवधि में मूल्यों से व अपनी संस्कृति से परिचित कराना होगा, मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता विकसित करनी होगी तथा अपने उत्साह को कायम रखना होगा। जिससे कि उनकी शिक्षण कार्य की प्रेरणा कायम रह सके।

समस्या कथन–

स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य प्राप्त किया गया है–

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों

की मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य परीक्षण के सात आयाम – आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, सैद्धान्तिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, नैतिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य में अन्तर नही है।
2. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की मूल्य परीक्षण के सात आयाम – आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, सैद्धान्तिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, नैतिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य में अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति के अनुसार, अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि से पूर्ण किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद में स्थित शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सभी छात्र एवं छात्राओं को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के चुनाव हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें कुल 200 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है।

उपकरण

मूल्य परीक्षण श्रीमती कमल द्विवेदी, रीडर एवं हेड, मनोविज्ञान विभाग, डी.जी. पोस्ट ग्रजूएट कालेज, कानपुर द्वारा निर्मित है। प्रस्तुत परीक्षण में सात प्रकार के मूल्य दिये गये है–

1. आर्थिक मूल्य
2. सामाजिक मूल्य
3. राजनैतिक मूल्य
4. सैद्धान्तिक मूल्य
5. धार्मिक मूल्य
6. नैतिक मूल्य

7. सौन्दर्यात्मक मूल्य

प्रस्तुत परीक्षण को आठ खण्डों में बाँटा गया है प्रत्येक खण्ड में सातों मूल्य के कथन निर्धारित किये गये है। इस प्रकार कुल 56 कथन दिये हुए है।

सांख्यिकी विधियाँ–

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों की तुलना–

H_1 स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों में अन्तर है।

H_{01} स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों में अन्तर नही है।

सारणी संख्या–1

स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों में अन्तर दर्शाते मध्यमान, विचलनशीलता एवं टी–मान

मूल्य के आयाम	महाविद्यालय	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी–मान
आर्थिक मूल्य	स्ववित्तपोषित	100	36.79	4.98	6.68	0.71	9.41*
	वित्तीय सहायता प्राप्त	100	30.11	5.07			
सामाजिक मूल्य	स्ववित्तपोषित	100	29.01	4.89	5.07	0.70	7.24*
	वित्तीय सहायता प्राप्त	100	34.08	5.09			
राजनीतिक मूल्य	स्ववित्तपोषित	100	26.35	5.49	7.84	0.71	11.04*
	वित्तीय सहायता प्राप्त	100	34.19	4.47			
सैद्धान्तिक मूल्य	स्ववित्तपोषित	100	34.64	4.66	0.54	0.67	0.81
	वित्तीय सहायता प्राप्त	100	35.18	4.87			
धार्मिक मूल्य	स्ववित्तपोषित	100	35.18	4.26	6.66	0.64	10.41*
	वित्तीय सहायता प्राप्त	100	28.52	4.83			

नैतिक मूल्य	स्ववित्तपोषित	100	28.87	4.90	7.43	0.64	11.61*
	वित्तीय सहायता प्राप्त	100	36.30	4.13			
सौन्दर्यात्मक मूल्य	स्ववित्तपोषित	100	32.41	4.96	5.99	0.69	8.68*
	वित्तीय सहायता प्राप्त	100	26.42	4.84			

*0.01 स्तर पर सार्थक

सारणी सं0 1 देखने पर ज्ञात होता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के आर्थिक मूल्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 36.79 एवं 30.11 है। दोनों वर्गो की विचलनशीलता क्रमशः 4.98 और 5.07 है। वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 9.41 के रूप में प्राप्त होती है। टी–मान का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में 0.01 प्रतिशत स्तर पर सार्थक है।

सार्थक परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना 0.01 प्रतिशत स्तर पर अस्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष निकलता है कि स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में आर्थिक मूल्य अधिक पायी गयी।

सारणी से देखने पर ज्ञात होता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक मूल्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 29.01 एवं 34.08 है। दोनों वर्गो की विचलनशीलता क्रमशः 4.89 और 5.09 है। वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 7.24 के रूप में प्राप्त होती है। टी–मान का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में 0.01 प्रतिशत स्तर पर सार्थक है।

सार्थक परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना 0.01 प्रतिशत स्तर पर अस्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष निकलता है कि वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में सामाजिक मूल्य अधिक पायी गयी।

सारणी से देखने पर ज्ञात होता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के राजनीतिक मूल्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 26.35 एवं 34.19 है। दोनों वर्गो की विचलनशीलता क्रमशः 5.49 और 4.47 है। वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 11.04 के रूप में प्राप्त होती है। टी–मान का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में 0.01 प्रतिशत स्तर पर सार्थक है।

सार्थक परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना 0.01 प्रतिशत स्तर पर अस्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष निकलता है कि वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में राजनीतिक मूल्य अधिक पायी गयी।

सारणी से देखने पर ज्ञात होता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के सैद्धान्तिक मूल्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 34.64 एवं 35.18 है। दोनों वर्गो की विचलनशीलता क्रमशः 4.66 और 4.87 है। वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 0.81 के रूप में प्राप्त होती है। टी–मान का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में 0.01 प्रतिशत स्तर

पर सार्थक नहीं है।

स्पष्टताः यह अवलोकन संयोगजन्य है। परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना 0.01 प्रतिशत स्तर पर स्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष निकलता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की सैद्धान्तिक मूल्य में समानता पाया गया।

सारणी से देखने पर ज्ञात होता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के धार्मिक मूल्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 35.18 एवं 28.52 है। दोनों वर्गो की विचलनशीलता क्रमशः 4.26 और 4.90 है। वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 10. 41 के रूप में प्राप्त होती है। टी–मान का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में 0.01 प्रतिशत स्तर पर सार्थक है।

स्पष्टताः यह अवलोकन संयोगजन्य है। परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना 0.01 प्रतिशत स्तर पर अस्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष निकलता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की धार्मिक मूल्य में असमानता पायी गयी।

सारणी से देखने पर ज्ञात होता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के नैतिक मूल्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 28.87 एवं 36.30 है। दोनों वर्गो की विचलनशीलता क्रमशः 4.90 और 4.13 है। वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 11. 61 के रूप में प्राप्त होती है। टी–मान का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में 0.01 प्रतिशत स्तर पर सार्थक है।

सार्थक परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना 0.01 प्रतिशत स्तर पर अस्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष निकलता है कि वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में नैतिक मूल्य अधिक पायी गयी।

सारणी से देखने पर ज्ञात होता है कि स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 32.41 एवं 26.42 है। दोनों वर्गो की विचलनशीलता क्रमशः 4.96 और 4.84 है। वास्तविकता के अध्ययन के लिए टी–मान की गणना की गयी जो 9.73 के रूप में प्राप्त होती है। टी–मान का यह परिकल्पित मान तालिका के मूल्य के परिप्रेक्ष्य में 0.01 प्रतिशत स्तर पर सार्थक है।

सार्थक परिणाम के आधार पर प्रश्नगत परिकल्पना 0.01 प्रतिशत स्तर पर अस्वीकृत होती है जिससे निष्कर्ष निकलता है कि स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में सौन्दर्यात्मक मूल्य अधिक पायी गयी।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में आर्थिक मूल्य, धार्मिक मूल्य एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक पायी गयी।

2. वित्तपोषित सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में सामाजिक मूल्य, राजनीतिक मूल्य एवं नैतिक मूल्य स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक पायी गयी।
3. स्ववित्तपोषित एवं वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के सैद्धान्तिक मूल्य एक–दूसरे के समान पाया गया।

सुझाव–

- मूल्यों की शिक्षा उन्हीं शिक्षकों के द्वारा सुचारू रूप से दी जा सकती है जिसमें मूल्यों के प्रति सच्ची भावना हो और जो अपने कार्य और व्यवहार द्वारा जीवन मूल्यों की शिक्षा दें।
- सत्यनिष्ठ बनकर अपने छात्रों को सच्चाई का पाठ पढ़ाये। स्वयं चरित्रवान बनकर अपने विद्यार्थियों के चरित्र का विकास करे।
- स्वयं देश–सेवा के प्रति समर्पित होकर नई–पीढ़ी को देश–सेवा के जीवन मूल्यों की शिक्षा दें।
- मूल्यों का छात्र/छात्राआं में उद्देश्यपरक भावना का विकास करना चाहिए

संदर्भ–ग्रंथ सूची

- आनंद, श्रुति (2001). *स्नातक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन,* इलाहाबाद : (पीएचडी). इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
- मिश्र, मनीष (2012). *स्नातक स्तर पर अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थयों के भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन.* एम.एड. लघु अध्ययन, इलाहाबादः नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
- यादव, सत्यप्रकाश (2010). *उच्च शिक्षा स्तर पर व्यावसायिक तथ सामान्य पाठयक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्य एवं सामाजिक समायोजन क्षमता का अध्ययन,* इलाहाबाद : नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
- यादव, राम सरन (2009). *अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन.* एम.एड. लघु अध्ययन प्रबन्ध, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
- वर्मा, पुन्नु (2004). *इलाहाबाद विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थी के राष्ट्रीय मूल्यों का अध्ययन,* इलााहाबाद : (पीएचडी) इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
- वेन्स, एच0ई0डी0 (2005). *एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी इन वैलयू एजूकेशन एण्ड इट्स रिलेशनशिप,* इन बुच (एजु) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकशेन, पृष्ठ सं0 470–470।
- वर्मा आई0 बी0 (2005). *एन इन्वेस्टीगेशन इनटू द इम्पैक्ट ऑफ ट्रेनिंग आन द वैलयूज,* इन बुच (एजू) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, सी0एस0एस0ई0, पृष्ठ संख्या 402–403।
- विल्सन, एस0 एच0 (1990) उद्धृत सोनकर, डी0के0 (2009). लघु अध्ययन, *स्वास्थ्य शिक्षा के लिए मूल्य स्पष्टीकरण की संव्यूहन की प्रभावशीलता का अध्ययन,* इलाहाबाद : नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
- सती, एन0 (1991) उद्धृत सोनकर, डी0के0 (2009). लघु अध्ययन, *अनुसूचित जाति व अन्य विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन,* इलाहाबाद : नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय।

- सारस्वत, आर (1982). *माध्यमिक स्तर के छात्रों के समायोजन, मूल्य उपलब्धि, स्थिति एवं लिंग प्रत्यय का अध्ययन,* लखनऊ : जनरल पत्रिका, (2007) वाल्यूम 5।
- सोनकर, कुमार दीपक (2009). *बी0 एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मूल्यों पर सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन,* इलाहाबाद : नेहरु ग्राम भारती विश्वद्यिालय।
- सिंह, प्रो0 धर्मराज (2009). *मानवीय मूल्यः मूल्य शिक्षण के सन्दर्भ में अध्ययन,* रिसर्च प्रेपर, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय।